भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संथाल परगना प्रमंडल का योगदानः एक ऐतिहासिक अध्ययन (1857–1947 ई.)

पीएच.डी पंजीयन हेतु शोध प्रस्ताव

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
सामाजिक विज्ञान संकाय
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखण्ड)

शोध निदेशक
डॉ. कौशल कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,
धनबाद, झारखण्ड

शोधार्थी
मुराद हुसैन
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय,
धनबाद, झारखण्ड

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संथाल परगना प्रमंडल का योगदानः एक ऐतिहासिक अध्ययन (1857–1947 ई.)

भूमिका

भारत लगभग 200 वर्षों तक ब्रिटेन का उपनिवेश रहा। इस दीर्धकालिन औपनिवेशिक शासन काल में भारत का इतना अधिक शोषण किया गया कि भारतीयों ने इस शोषणकारी शासन–व्यवस्था को उखाड़ कर अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्ष किया। इस स्वतंत्रता आंदोलन में भारत के हर प्रांत के वासियों ने भाग लिया।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में झारखण्ड राज्य के संथाल परगना प्रमंडल का भी गौरवशाली योगदान रहा है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास संथाल परगना के स्वतंत्रता सेनानियों के बिना पूर्ण नहीं हो सकता है। अति प्राचीन काल में नरीखंड़ (**वीरोत्तम, 2016, पृष्ठ.13**)[1] और कांकजोल (**वीरोत्तम, 2016, पृष्ठ.13**)[2] के नाम से चिन्हित इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ के निवासी स्वतंत्रता प्रिय थे और जब उन्हें लगा कि उनकी स्वतंत्रता एवं धार्मिक–आर्थिक व्यवस्था पर प्रहार किया जा रहा है तब उन्होंने सशस्त्र विद्रोह किया। इस विषय में संथाल परगना के सर्वे एण्ड सेटलमेंट ऑपरेशन के अंतिम रिपोर्ट में **एच. मेफर्सन** ने लिखा है *"संथालों को 1827 के रेगु–I से निकल कर पुलिस, कोर्ट–कचहरी, महाजन तथा जमींदारों का शोषण और अत्याचार सहने को विवश कर दिया गया। उन्हें बचाने के लिए मि. पोटेंट के पास कोई न्यायिक अधिकार नहीं था। उनके बीच में पड़ने पर उन्हें अपमानित किया गया। संथाल हूल का कारण मुख्यतः उपरोक्त समस्याओं से संबंधित माना जाता है, पर अब ऐसा लगता है कि संथालों में स्वतंत्र रहने की गहरी प्रवृति ही इसका मूल कारण है।"* (**रणेन्द्र एवं सुधीर पाल पृष्ठ संख्या 118–19**)।भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के पूर्व ही यहाँ के स्वतंत्रता प्रेमियों ने अंग्रेजों के खिलाफ हूल किया और अपने शौर्य का प्रदर्शन किया। इस प्रकार क्षेत्रीय आंदोलन की भूमिका स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण बन जाता है।

संथाल परगना का स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में 1855 का संथाल हूल का इतिहास सीधे जाकर जुड़ जाता है। इस विद्रोह की ज्वाला अभी ठंडी भी नहीं हुई थी कि 12 जून, 1857 को रोहिणी (देवघर) में 1857 की क्रांति का शंखनाद हो गया।[4] भारतीय स्वतंत्रता ओदोलन के क्रम में 1857 की क्रांति में संथाल परगना के सेनानियों ने बढ़–चढ कर हिस्सा लिया। भले ही ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह में शामिल सेनानियों को नियंत्रित कर लिया, किन्तु वे उनके ह्रदय में जन्मे राष्ट्रवाद की भावना को नहीं कुचल सके। इसी का परिणाम था कि यह प्रांत क्रांतिकारी आंदोलनों का भी केन्द्र बना। सेडिशन कमेटी रिपोर्ट 1918 में क्रांतिकारी आंदोलन के रूप में देवघर की चर्चा की गई है।[5] इन्हीं परिस्थितियों में गाँधीजी के नेतृत्व में चलाए जा रहे असहयोग आंदोलन से पूरा संथाल परगना आंदोलित हो उठा। **बिनोदानंद झा, मोतीलाल केजरीवाला** जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के नेतृत्व में इस क्षेत्र में बहिष्कार आंदोलन काफी सफल रहा। बिनोदानंद झा ने स्वंय अपने माथे पर खद्दर का गट्ठर लेकर गाँवों और शहरों में घूमकर स्वदेशी का प्रचार किया।[6] 1925 में गाँधीजी ने अपने देवघर यात्रा के दौरान मद्य–निषेध के लिए सत्याग्रह आंदोलन चलाने एवं चरखा चलाने का आह्वान किया। संथाल परगना के सेनानियों ने जब उनके नेतृत्व में सत्याग्रह हुआ जिसमें संथाल परगना के सेनानियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। सितंबर 1930 तक 274 सेनानियों को बंदी बनाया गया था।[7] 1942ई. के भारत छोड़ो आंदोलन का भी व्यापक प्रभाव इस अंचल पर पड़ा। **विनोदानंद झा, गौरी शंकर डालमिया** और **छविलाल झा** जैसे कई नेता जो शामिल थे उन्हें बंदी बना लिया गया। एक अनुमान के अनुसार 390 गिरफतारियाँ हुई थी।[8] इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में संथाल परगना प्रमंडल का अतुल्यनीय योगदान रहा है।

शोध समस्या

- झारखंड के प्रमुख भौगोलिक इकाईयों में संथाल परगना शामिल है, जिसे विभिन्न स्रोतों में दामिन–ए–कोह के रूप में जाना जाता है। प्रारंभिक देशी–विदेशी यात्रियों के वर्णनों और मध्यकालिन फारसी इतिहास ग्रंथों में इस क्षेत्र को अलग–अलग नामों से जाना गया है।
- 1857 की क्रांति ने लगभग पूरे देश को प्रभावित किया था। इस क्रांति ने झारखंड के संथाल परगना के किन–किन क्षेत्रों को प्रभावित किया तथा इसने यहाँ के निवासियों को कैसे क्रांति में शामिल होने के लिए प्रेरित किया?
- राष्ट्रीय आंदोलन में जब कॉग्रेस अपना योगदान समय के अनुसार नहीं दे पाया तो देश के क्रांतिकारियों ने अपने बल पर अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह करना प्रारंभ कर दिया जिससे पूरे देश में स्वतंत्रता की माँग प्रबल होने लगी। इस क्रांतिकारी आंदोलन में संथाल परगना का रोहिणी (देवघर जिला) नामक स्थान एक प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरा।
- गाँधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा मिली जिसने समाज के सभी वर्गों को समाहित किया। गाँधीजी के मार्गदर्शन में संथाल परगना के स्वतंत्रता प्रेमियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।
- स्वाधीनता आंदोलन में पूरे अँचल का योगदान अभूतपूर्व रहा। इस क्षेत्र के जनजातियों ने गाँधीजी के साथ मिलकर आंदोलन को गति दिया।

साहित्य–समीक्षा

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए विविध सहित्यों का अवलोकन किया जाएगा साथ ही संबंधित क्षेत्र में मान्य इतिहासकारों की कृति से सहायता ली जाएगी। पाण्डेय शत्रुघ्न कुमार की पुस्तक ***'झारखंड का इतिहास'***[1] में यहाँ के जनजातियों की प्रारंभ से ही अंग्रेजों के प्रति घृणा के भाव को रेखांकित किया गया। डॉ. राम कुमार तिवारी ने अपनी पुस्तक **'झारखंड की रूपरेखा'**[2] में झारखंड के भौगोलिक बनावट, खनिज, जलवायु, कृषि, परिवहन, पर्यटन आदि के विभिन्न पक्षों का समावेश विस्तार रूप से किया है। जानेमाने क्षेत्रीय इतिहासकार वीरोत्तम ने अपने किताब ***'झारखंड इतिहास एवं संस्कृति'*** [3] में राज्य के विभिन्न कालखंडों में हुए बदलावों को बड़ी रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है साथ ही संथाल परगना के जनजातीय विद्रोहों का भी उल्लेख किया है। डॉ. दिनेश कृत ***'संथाल परगनाः इतिहास पुरातत्व और संस्कृति'***[4] ने संथाल परगना के इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति के संबंध में गहरी अंतदृष्टि को प्रस्तुत किया है। संथाल परगना में पहाड़ियां जनजाति विद्रोह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक का विवरण दिया है।

शोध समस्या का विवरण

- प्रस्तावित शोध में संथाल परगना का भौगोलिक बनावट का अध्ययन करना तथा यहाँ के जनजतियों और गैर–जनजातियों का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान का विश्लेषण करना
- 1857 की क्रांति में संथाल परगना प्रमंडल ने राष्ट्रीय नेतृत्वकर्त्तायों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया था। रोहिणी नामक गाँव से झारखंड में 1857 की क्रांति का आरंभ हुआ था
- स्वाधीनता आंदोलन में संथाल परगना के बिनोदानंद झा ने स्वदेशी को बढ़वा देने के लिए खद्दर का व्यापक स्तर पर प्रचार किया। अन्य स्वतंत्रता सेनानियों में मोतीलाल केजरीवाल, छबिलाल झा व कुछ महिलाएँ जैसे– शैलबाला राय, जमुना देवी, नूनामणि देवी, उषा देवी आदि ने भी योगदान दिया

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संथाल परगना प्रमंडल के आदिवासी समाज के कई स्वतंत्रता प्रेमी जैसे– बंगम मांझी, लाल बाबा हेम्ब्रम आदि ने अभूतपूर्व सहयोग दिया

शोध का उद्देश्य

- संथाल परगना का भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालना एवं इसके भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन करना शोध का उद्देश्य होगा
- 1857 की क्रांति ने पूरे देश को प्रभावित किया तथा इसने संथाल परगना प्रमंडल को क्रांति में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। शोध के माध्यम से उन क्षेत्रों का पता लगाना है जिसने क्रांति में अपना योगदान दिया, शोध का उद्देश्य होगा
- क्रांतिकारी आंदोलन के समय बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र व अन्य क्षेत्रों में बडे पैमाने पर क्रांति हुई। इस क्रांति ने संथाल परगना के देवघर को विशेष रूप से प्रभावित किया। देवघर क्रांतिकारियों का शरणास्थली बन गया था तथा वे देश के अलग–अलग क्षेत्रों में क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम यहाँ से देते थे।
- राष्ट्रीय आंदोलन में संथाल परगना ने राष्ट्र स्तर के नेताओं के साथ मिलकर आंदोलन भाग में लिया तथा कई ऐसे मौके भी आए जब उन्हें जेल जाना पड़ा। शोध के माध्यम से इन आंदोलनकारियों का पता लगाना तथा इनके वर्तमान स्थिति को भी जानना शोध उद्देश्य होगा

शोध–प्रश्न

- संथाल परगना का भौगोलिक रूपरेखा क्या है? एवं भौगोलिक विशेषताएँ कैसी है?
- 1857 की क्रांति में इस प्रमंडल में कैसी गतिविधियाँ रही?
- संथाल परगना में राष्ट्रीय आंदोलन का उद्भव कैसे हुआ एवं इसके लिए कौन–सी परिस्थितियाँ उत्तरदायी थी?
- संथाल परगना क्षेत्र में क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ किस प्रकार रही?
- स्वाधीनता आंदोलन में इस क्षेत्र का क्या योगदान रहा?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संथाल परगना प्रमंडल का योगदान अति महत्वपूर्ण रहा है, जिसका ऐतिहासिक अध्ययन के लिए तुलनात्मक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक के साथ–साथ वर्णनात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध कार्य को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करने की योजना है।

	भूमिका
पहला अध्यायः	संथाल परगना का संक्षिप्त भौगोलिक परिचय
दूसरा अध्यायः	1857 की क्रांति में संथाल परगना का योगदान
तीसरा अध्यायः	क्रांतिकारी आंदोलन और संथाल परगना
चौथा अध्यायः	संथाल परगना में राष्ट्रीय चेतना का उद्भव
पाँचवाँ अध्यायः	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में संथाल परगना का योगदान
	उपसंहार

ग्रंथ सूची

डाटा संग्रहण एंव विश्लेषण में उपकरणों का प्रयोग

प्रस्तावित शोध में मानचित्र, ग्लोब, चित्र, आँकड़े व एटलस इत्यादि पैमानों की सहयता से ऐतिहासिक घटानाओं की दशा–दिशा, सीमाएँ, स्थानीयकरण तथा प्राकृतिक स्थितियों का ज्ञान कराया जा सकेगा। शोध सामग्री ट्राइबल म्यूजियम राँची, राजकीय पुस्तकालय धनबाद, राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, खुदाबक्श ओरियेंटल पुस्तकालय पटना, एशियाटिक सोसाइटी बंबई एवं देश का पहला जिला जामताड़ा के विभिन्न पँचायतों के पुस्तकालय से डाटा संग्रहित किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध कार्य के महत्व

संथाल परगना क्षेत्र में स्वाधीनता आंदोलन पर शोध कार्य का अभाव है। अतः इस विषय पर शोध कार्य करना उपयोगी सिद्ध होगा। चूँकि यह शोध कार्य संथाल परगना से संबंधित है अतः यह शोध संथाल परगना क्षेत्र के इतिहास का विकास करेगा। इस तरह यह क्षेत्रीय इतिहास लेखन की दृष्टि से भी एक सजग कदम होगा।

समकालीन ज्ञान में योगदान

प्रस्तावित शोध पूर्णरूप से क्षेत्रीय इतिहास लेखन में योगदान देने के साथ–साथ स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास को भी समृद्ध करेगा। भविष्य में इस क्षेत्र पर कार्य करने वाले शोधार्थी, समाजसेवी एवं संथाल परगना क्षेत्र के इतिहास में रूचि रखने वाले अध्येयता के लिए विशेष लाभाकारी होगा।

शोध का भावी स्वरूप

प्रस्तावित शोध संथाल परगना क्षेत्र से संबंधित है और यह मात्र इस क्षेत्र की स्वतंत्रता संग्राम संबंधी गतिविधियों पर ही केन्द्रित रहेगा।

भविष्य में शोधार्थी इस विषय के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न शोध कार्य कर सकेंगे। इससे उन्हें सहायता मिलेगी। झारखंड विषयक शोध कार्यों में भी इस शोध कार्य से मदद मिलेगी।

संदर्भ–सूची

1. वीरोत्तम, बालमुकुन्द,*'झारखंड का इतिहास एवं संस्कृति'*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2016, पृ.सं–13,
2. वहीं, पृ.सं–13
3. पाल, रणेन्द्र, सुधीर, *'झारखंड इन्साइक्लोपीडिया खण्ड–I'* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं–118,119
4. कुमार, दिनेश, *'संथाल परगनाः इतिहास पुरातत्व और संस्कृति'*, एकेडमिक फोरम, रामपुरहाट, 2008, पृ.सं–62
5. पाल, रणेन्द्र, सुधीर, *'झारखंड इन्साइक्लोपीडिया खण्ड–I'* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं–118,119
6. पाण्डेय, शत्रुध्न, *'झारखंड का इतिहास'* सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशक, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं–176
7. वही, पृ.सं–196

8. वीरोत्तम, बालमुकुन्द,*'झारखंड का इतिहास एवं संस्कृति'*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2016, पृ.सं–376
9. तिवारी, राम, कुमार, *'झारखंड की रूपरेखा'*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2019
10. सिंह, रंजीत, कुमार, *'संथाल परगना का इतिहास'*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
11. दत्ता, आर.सी. *'द संथाल रेबेलियन'*, के.पी. बागची एंड़ कंपनी, कोलकाता, 1968
12. किशोर, कमल, *'संथाल परगनाः इतिहास और संस्कृति'*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
13. दत्त, के.के., *'बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास'*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2000
14. मिश्र, विमलकिशोर एवं वीरेन्द्र, *'झारखंड समग्र'*, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2020